Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

Original Article

प्रेमचंदजी के उपन्यास साहित्य में अबला वेश्या नारी के जीवन की अवस्था ।

प्रा. सचिन भागवत खरात
हिंदी विभाग,डॉ. गणपतराव देशमुख महाविद्यालय सांगोला
Email- sachinkharat4411@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171023
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 10
Pp. 105-106
October. 2025
Submitted: 18 Sept. 2025
Revised: 28 Sept. 2025
Accepted: 13 Oct. 2025
Published: 31 Oct. 2025

सारांश

प्रेमचंदजी ने अपने उपन्यासों में समाज में उपेक्षित और विवश नारी के जीवन को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उन्होंने वेश्या नारी को केवल पतन का प्रतीक नहीं, बल्कि समाज की अन्यायपूर्ण परिस्थितियों की शिकार के रूप में प्रस्तुत किया है। 'सेवासदन' की सुमन और 'गबन' की जोहरा जैसी पात्रों के माध्यम से प्रेमचंदजी यह दर्शाते हैं कि वेश्यावृत्ति नारी की स्वेच्छा नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक विवशताओं का परिणाम है। नारी की शिक्षा, सम्मान, और समानता के अधिकारों से वंचित समाज में पुरुष प्रधान मानसिकता उसे पतन की ओर धकेल देती है। प्रेमचंदजी का दृष्टिकोण सहानुभूतिपूर्ण है — उन्होंने वेश्या नारी के हृदय की करुणा, त्याग और मानवता को उजागर करते हुए समाज को आत्ममंथन के लिए प्रेरित किया है।

मुख्य शब्द : *प्रेमचंद, वेश्या नारी, सेवासदन, गबन, सुमन, जोहरा, नारी जीवन, समाज, विवशता, पुरुष प्रधानता, सहानुभूति, यथार्थवाद, सामाजिक अन्याय*

प्रस्तावना :

हमारे भारतीय संस्कृती में नारी को आदर्श स्थान दिया गया है। हमारी संस्कृती मे नारी को देवी माना जाता है। नारी को समाज में एक महत्त्वपूर्ण ऐसा स्थान दिया गया है। लेकिन हमारे पुरुष प्रधान संस्कृती मे किसी भी नारी के हाथ से जरा सी भूल या चूक हो जाने पर उसे समाज मे बहिष्कृत कर देता है। उसे कुमार्ग पर जाने के लिए पुरुष का हाथ होता है। पूरा समाज उसे पतिता समझता है परंतु हमारा समाज पुरुष को पतिता नहीं समझता। नारी अगर कुमार्ग पर चलती है तो उसे कलंकिनी कहा जाता है। तब उसके साथ परिवार के साथ – साथ रिश्तेदार भी बुरा बर्ताव करते है। उसे बात करना तक बंद कर देते है। नारी का यह कलंकित रूप ही वेश्या का है । उससे पूरा समाज अपना नाता तोड़ देता है। ऐसी ही नारी के लिए सब दरवाजे बंद होते है उसे सिर्फ दोही मार्ग दिखाई देते हैं । एक वह है जो आत्महत्या करती है। या तो अपना निर्वाह करने के लिए वेश्यावृत्ति को अपनाती है।

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास साहित्य में वेश्यावृत्ति के लिए सिर्फ नारी को ही जिम्मेदार नहीं माना है। उन्होंने उसके लिए उन परिस्थिति और हालातो को ज्यादा जिम्मेदार माना है। उसको इस मार्ग पर जाने के लिए विवश कर देने वाली यह पुरुष प्रधान संस्कृति को भी जिम्मेदार माना है। आर्थिक पराधीनता उसके चरित्र पर शंका और पारिवारिक कलह अशिक्षा आदि ऐसे कारण है। जो वेश्या बनने के लिए विचार को जन्म देती है।प्रेमचंद जी ने अपनी उपन्यास 'सेवासदन' में वेश्या समस्याओं को एक समाज में ज्वलंत समस्या बताइए है। उन्होंने इस उपन्यास में केंद्रीय पात्र उच्च कुल में जन्म लेने वाली सुमन का परिचय दिया है।

सुमन एक कुलीन घर की लड़की है उसका विवाह उसके मामा जी उमानाथजी ने एक गरीब दोहाजू गजाधर पांडे नामक व्यक्ति के साथ कर दिया था।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
प्रा. सचिन भागवत खरात, हिंदी विभाग ,डॉ. गणपतराव देशमुख महाविद्यालय सांगोला

How to cite this article:
खरात, . सचिन . भागवत . (2025). प्रेमचंदजी के उपन्यास साहित्य में अबला वेश्या नारी के जीवन की अवस्था ।. Journal of Research and Development, 17(10), 105–106. https://doi.org/10.5281/zenodo.17636829

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17636829
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

वह सुमन को ज्यादा सुख से नहीं रख पाया। सुमन निराशा रहने लगी सुमन ने सिर्फ ऐशो आराम को ही अपना सर्वस्व मान लिया। और फिर उसकी मन घर गृहस्थिसे उठ गया। ऐसी विषम परिस्थितियों में पत्नी का कर्तव्य निभाना उसे कठिन लगने लगा। सुख प्राप्ति की तृष्णा बार-बार उसे सताने लगती है। जहां पर सुमन रहती थी। वह इलाका भी कल्हण खास नहीं था। उसके घर के सामने ही भोलीबाई नामक वेश्या का घर था। भोलीबाई वेश्या का मान सम्मान और उसका वैभव देखकर सुमन का हृदय आकांक्षाओं और दमीत वासनाओं से जागृत हो जाता है।

अपने पति की दरिद्रता, कृपनता, प्रेमहीनता और कठोरता के कारण सुमन अपनी ही घर में उपेक्षित थी। धीरे-धीरे उसका मन और हृदय टूट जाता है। उसका पति उसे संशयी वृत्ति से देखा है। वह एक दिन भोली बाई का गोनी सुनने के लिए सुभद्रा के घर पर चली जाती है। तब सुमन को अपने घर पर आने में बहुत रात हो जाती है। तब गजाधर उसे घर में नहीं आने देता उसे भला बुरा कहता हुआ उसके चरित्र पर लांछन लगा देता है। तीखा व्यंग कहता है सुमन मारपीट खा सकती है। परंतु मिथ्या दोषारोपण के अपमान को नहीं सह सकती है। गजाधर रात को ही सुमन को घर से बाहर निकाल देता है घर से बाहर निकाल देने पर इस अबला नारी का कहीं पर भी ठिकाना नहीं होता है। फिर कुछ सोचकर वह रात को ही सुमन पंडित पद्मसिंह शर्माजी के घर पर चली जाती है। वहां पर भी यह समाज उसे चैन से नहीं रहने देता है। यह सोचती है कि यहां ही मैं सिलाई करके अपना गुजारा करने जाती है। लेकिन पुरुष की का कामुक प्रवृत्ति उसे वहां भी चैन से जीने नहीं देती। अंत में सुमन को ऐसा लगा कि मेरे लिए सब रास्ते बंद हो गए हैं। चारों ओर उसे अंधेरा ही नजर आता है। सुमन अपने जीवन से हताश होकर भोली बाई के कोठे पर जाने के लिए तैयार होती है। वेश्या बनने के लिए विवश होती है।

अनमेल विवाह के कारण ही सुमन वेश्या बनती है। समाज सुधारक विट्ठल दास से स्वयं सुमन वेश्यावृत्ति अपनाने का मूल कारण बताती है। मैं एक उच्च कुल की लड़की हू। मुझे अपना अपमान नहीं सहा जाता था जिसका निराधार होना चाहिए उसका आधार होते हुए देखकर मेरे हृदय में कुवासनाएं उठने लगी थी। उसके दिल में यह खयाल आने लगा कि समाज में वेश्याओं को मान सम्मान मिलता है। लेकिन उच्चकुलीन स्त्रियों को नहीं मिलता है। मेरे विचार से सुमन को अगर संतान होती तो वह अपने बच्चो के बारे में सोचती मेरे जाने के बाद मेरे बच्चों का क्या होगा यह विचार उसके दिल में जरूर आता और फिर ऐसा घृणित कार्य अपने जीवन में कभी नहीं करती। अगर उसे उसके घर पर ही पति का प्यार और आदर सम्मान मिलता तो वह गृह त्याग नहीं करती। परंतु वहां भी नियति ने उसका साथ नहीं दिया इसी कारण वह वेश्या बन जाती है। भोलीबाई के माता-पिता ने चंद रुपयों के लालच में आकर भोली का विवाह एक वृद्ध से किया यह विवाह भोली को पसंद नहीं था। यह विवाह उसकी मर्जी के खिलाफ था। एक किशोरी कन्या का एक वृद्ध गले में बांधना कितना जुल्म और सितम से भरा है। इसी कारण 'सेवासदन' की भोलीबाई अपनी विलास लालसा और अतृप्त आकांक्षाओं की तृप्ति के लिए वेश्या बनती है।

प्रेमचंद जी ने अपने 'गबन' इस उपन्यास में जोहरा नामक एक वेश्या का चरित्र अंकन किया है। जोहरा के माध्यम से प्रेमचंदजी ने यह दिखाने का प्रयास किया है। कि वेश्या वास्तव में बुरी नहीं होती है। अपने परिस्थिति और जीवन में आने वाली आपत्तियों के कारण और कोई दूसरा मार्ग न मिलने पर जीवन से हताश होकर इस वेश्या मार्ग को अपनाती है। और कभी अगर अपने जीवन में सुधारने का अवसर मिल जाता है तो वह सुधर भी जाती है। इस संसार में लोग अपना दिल बहलाने के लिए और वासना तृप्ति करने के लिए अवश्य वह वेश्या के पास चले आते है। यहां पर भी प्रेमचंद जी ने 'गबन' उपन्यास का नायक रमाकांत को पुलिस अपनी हिरासत में लेती है। तब उसकी पूछताछ करते वक्त पुलिस को इस बात का पता चल जाता है। कि रमाकांत ने प्रयाग में_मुन्सिपल ऑफिस में कुछ रुपयोंका का गबन किया है। इसलिए वह कोलकाता भाग कर आया है। तब पुलिस अधिकारी उसे झूठ बोलकर धमाका कर डकैती के केस में उसे मुखबिर बनाते है। अदालत में झूठी गवाही देने के लिए रमाकांत को कुछ लालच और धमकी भी देते है। उसका दिल बहलाने के लिए उसके मनोरंजन के लिए पुलिस जोहरा नामक वेश्या की नियुक्ति कर देते है। रमाकांत का सच्चा प्यार पाकर जोहरा अपने मन ही मन में खुश होती है। वेश्या कभी भी वफादार नहीं होती है। लेकिन जोहरा रमाकांत को विश्वास दिलाती हुए कहती है कि, हां साहब हम वफा क्या जाने आखिरकार हम वेश्या ही तो ठहरी। बेवफा वेश्या भी कभी वफादार हो सकती है। जोहरा अपने जीवन में रमाकांत का सच्चा प्रेम और सहानुभूति पाकर वेश्यावृत्ति का मार्ग छोड़ देती है। सीधा-साधा जीवन बिताने में उसे अब आनंद मिलता है। जोहरा ने अब चंचल नश्वर अदाओं का गला घोट दिया है। अब वह सीधी साधी त्याग की मूर्ति बन गई है। वेश्यावृत्ति को त्याग कर जोहरा का जीवन अब आदर्शमय बन गया है। वह अब दूसरों की सेवा करने में ही अपने जीवन का कर्तव्य समझती है। अपने सेवाभावी विचारों के माध्यम से वेश्या का दाग धुलाने का प्रयास कर रही है। अंत में जोहरा गंगा नदी में बहते हुए स्त्री की जान बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देती है। वेश्या बन गई नारियां मूलत: दुराचारिणी नहीं होती है। पारंपरिक और सामाजिक परिस्थितियों उनसे विवश हताश होकर ही अंत में वेश्या मार्ग को अपनाती है। नारी अपने सतीत्व पर कोई आंच नहीं आने देती। वह अपने सतीत्व को सबसे मूल्यवान समझती है। समाज और परिवार के अत्याचारों के ही वह पतिता होती है। जीवन का निर्वाह करने के लिए दूसरा कोई मार्ग न मिलने पर वह इस मार्ग का अवलंब करती है। प्रेमचंदजी अपने उपन्यासों के माध्यम से वेश्या नारी के प्रति सहानुभूति रखते है। वह उसे घृणा की दृष्टि से नहीं देखते है। घृणा के पात्र तो समाज है।

संदर्भ

1. मुंशी प्रेमचंद – 'सेवासदन' 56 – 2007
2. मुंशी प्रेमचंद – 'गबन' 52 - 2003